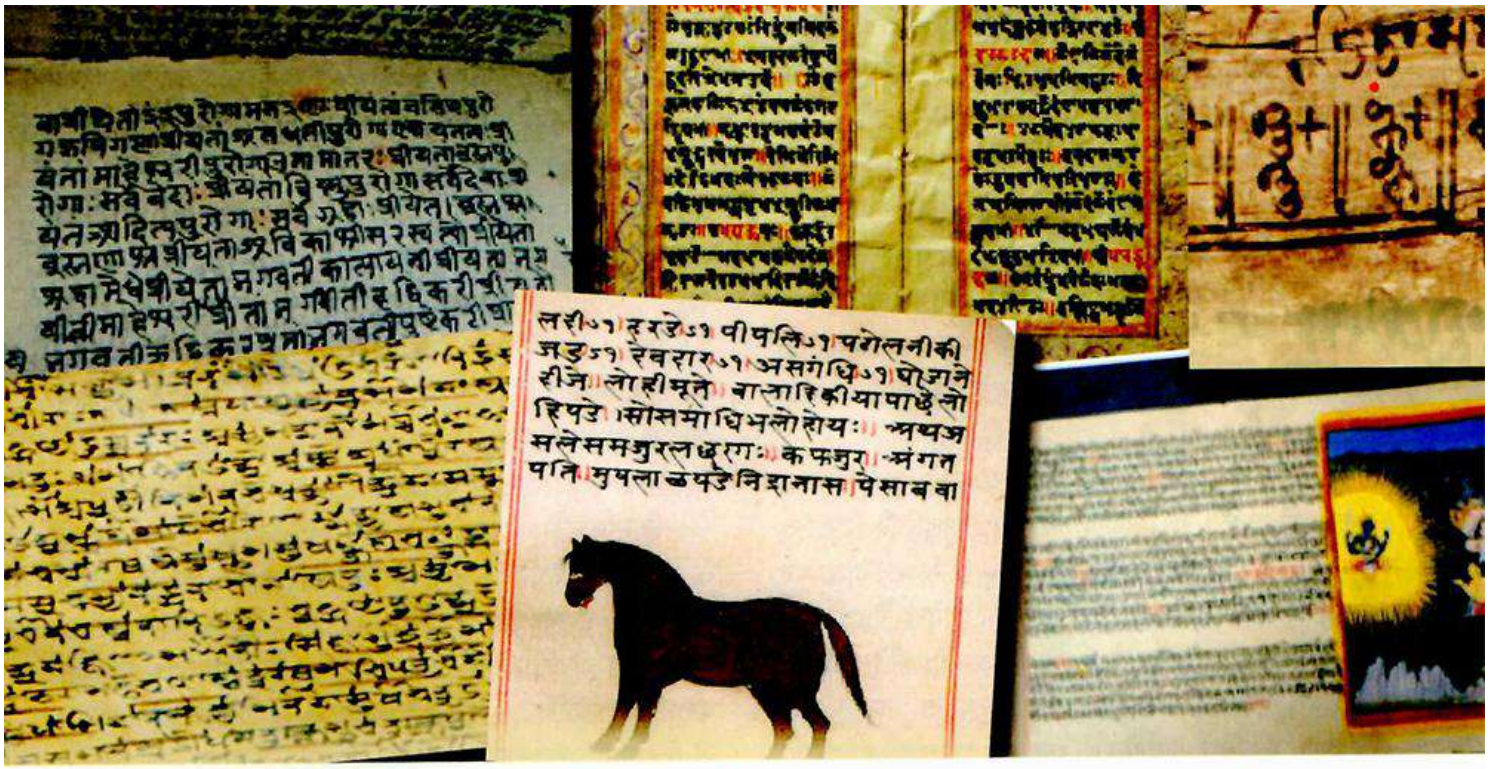

ज्ञान भारतम् : भारत की पांडुलिपि विरासत का संरक्षण

भारत की सभ्यतागत विरासत केवल स्मारकों और परम्पराओं में ही नहीं, बल्कि उन लाखों पांडुलिपियों में भी जीवित है जिनमें दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य और समाज से जुड़ा सदियों का ज्ञान संरक्षित है। समय के प्रभाव और सीमित पहुँच के कारण इस अमूल्य धरोहर का बड़ा हिस्सा आम लोगों की पहुँच से दूर होता गया। ऐसे समय में डिजिटल प्रौद्योगिकी ने संरक्षण के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं।ज्ञान भारतम् मिशन का उद्देश्य इस पांडुलिपि विरासत का संरक्षण, डिजिटलीकरण और उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुलभ बनाना है।

भारत की सभ्यतागत विचार-संपदा और सृजनशीलता ने समय के साथ निरंतर स्वयं को विकसित और पुनर्परिभाषित किया है तथा आज डिजिटल युग में उसे अभिव्यक्ति के नए आयाम प्राप्त हुए हैं। उन गुरुकुलों से, जिन्होंने पीढ़ियों तक ज्ञान और चिंतन की परम्परा को पोषित किया, लेकर नालंदा और तक्षशिला जैसे महान विश्वविद्यालयों तक, जिन्होंने विश्वभर के विद्वानों को आकर्षित किया–शिक्षा और ज्ञान हमारी सभ्यता के केंद्र में रहे हैं। इस विशाल परम्परा को पांडुलिपियों, स्मारकों और सांस्कृतिक परम्पराओं के माध्यम से संरक्षित रखा गया, जो आज हमारी पहचान की आधारशिला हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में डिजिटल इंडिया अभियान ने नागरिकों के शासन, अवसरों और संस्कृति से जुड़ने के तरीकों को नई दिशा दी है। भारतनेट के माध्यम से गाँवों तक उच्च गति इंटरनेट पहुँचाया जा रहा है, डिजीलॉकर में सरकारी दस्तावेज सुरक्षित रूप से संग्रहीत किए जा रहे हैं, उमंग ऐप के माध्यम से नागरिक सैकड़ों सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं, ई-हॉस्पिटल के ज़रिए स्वास्थ्य सेवाएँ अधिक सुलभ हुई हैं तथा यूपीआई ने वित्तीय समावेशन को नई गति प्रदान की है।

- ज्ञान भारतम् मिशन भारत की विशाल पांडुलिपि विरासत के संरक्षण, डिजिटलीकरण और व्यापक प्रसार के लिए एक राष्ट्रीय पहल है, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए परम्परा और प्रौद्योगिकी के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण करती है।
- 11–13 सितम्बर 2025 के दौरान आयोजित ज्ञान भारतम् सम्मेलन इस दिशा में पहला अंतरराष्ट्रीय मंच बना, जिसने देशभर तथा विदेशों से जुड़े हितधारकों को भारत की पांडुलिपि विरासत के संरक्षण और डिजिटलीकरण के भविष्य पर विचार-विमर्श और दिशा-निर्धारण के लिए एक साथ लाया।
- अत्याधुनिक डिजिटल उपकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित नवाचार भारत की पांडुलिपि विरासत को वैश्विक

कुरुक्षेत्र संपादकीय टीम

स्तर पर अधिक सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

हमारी विरासत के संरक्षण में डिजिटल तकनीकों की भूमिका

आज डिजिटल तकनीकें केवल सेवाओं को सरल नहीं बना रहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। अभिलेखागारों, संग्रहालयों और संरक्षण संस्थानों को इन तकनीकों के माध्यम से अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायता मिल रही है।

इसी भावना के साथ संस्कृति मंत्रालय ने 11–13 सितम्बर 2025 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में "पांडुलिपि विरासत के माध्यम से भारत की ज्ञान परम्परा का पुनर्स्मरण" विषय पर प्रथम ज्ञान भारतम् अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में देश और विदेश से 1,100 से अधिक प्रतिभागियों– जिनमें विद्वान, विशेषज्ञ, संस्थान और सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधि शामिल थे–ने भाग लिया। यह मंच भारत की पांडुलिपि विरासत के संरक्षण, डिजिटलीकरण और वैश्विक साझेदारी की दिशा में विचार-विमर्श और आगे की रणनीति तैयार करने का एक महत्वपूर्ण अवसर बना।

सभ्यतागत विरासत को समर्पित एक राष्ट्रीय पहल

ज्ञान भारतम् मिशन भारत की विशाल पांडुलिपि विरासत के संरक्षण, डिजिटलीकरण और व्यापक प्रसार के लिए प्रारम्भ किया जा रहा एक दूरदर्शी राष्ट्रीय अभियान है। यह मिशन एक ओर हमारी सभ्यतागत जड़ों को सम्मान देने का प्रयास है, वहीं दूसरी ओर वर्ष 2047 तक विकसित भारत के उस व्यापक दृष्टिकोण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है, जिसमें भारत अपनी प्राचीन ज्ञान परम्परा और आधुनिक नवाचारों के समन्वय के साथ विश्वगुरु के रूप में स्थापित हो।

इस उद्देश्य से सरकार ने ज्ञान भारतम् मिशन की शुरुआत एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल के रूप में की है। इसका लक्ष्य देशभर में शैक्षणिक संस्थानों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों तथा निजी संग्रहों में सुरक्षित पांडुलिपियों का सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण, संरक्षण, डिजिटलीकरण तथा उन्हें व्यापक रूप से सुलभ बनाना है।

पांडुलिपियों को अधिक सुलभ बनाने की दिशा में

मिशन के अंतर्गत इन कार्यों को गति देने के लिए देशव्यापी स्तर पर क्लस्टर केंद्र (CCs) और स्वतंत्र केंद्र (ICs) का नेटवर्क स्थापित किया जा रहा है। इस दिशा में अब तक 40 से अधिक केंद्र जोड़े जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त 28 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को मिशन के कार्यान्वयन हेतु नोडल समन्वय प्राधिकरण के रूप में जोड़ा गया है।

मेटाडाटा निर्माण, राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी (NDR) से एकीकरण, उपकरणों की स्थापना, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित डिजिटल मंचों के विकास तथा दीर्घकालिक डेटा संरक्षण जैसे कार्यों के लिए तकनीकी साझेदारों को भी शामिल किया गया है।

देशव्यापी स्तर पर पांडुलिपियों से संबंधित कार्यों को व्यापक और सघन रूप से आगे बढ़ाने के उद्देश्य से लगभग एक करोड़ पांडुलिपियों को इस मिशन के दायरे में लाने का लक्ष्य रखा गया है। ज्ञान भारतम् मिशन का उद्देश्य भारत की पांडुलिपि संपदा को क्षेत्र, भाषा और लिपि की सीमाओं से परे जाकर संरक्षित और सुलभ बनाना है।

वैज्ञानिक संरक्षण और पुनर्संरक्षण

ज्ञान भारतम् मिशन भारत की पांडुलिपि विरासत की सुरक्षा के लिए एक व्यवस्थित और प्रौद्योगिकी-संचालित ढाँचे पर कार्य करता है। इसके अंतर्गत निवारक और उपचारात्मक उपायों के माध्यम से वैज्ञानिक संरक्षण एवं पुनर्संरक्षण, उच्च गुणवत्ता वाला डिजिटलीकरण, राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी के माध्यम से केंद्रीकृत पहुँच तथा क्लाउड आधारित बैकअप और आपदा पुनर्प्राप्ति व्यवस्था शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय अभिलेखागार (NAI) ने भी ऐतिहासिक अभिलेखों की उच्च गुणवत्ता वाली डिजिटल प्रतियाँ तैयार करने के लिए बड़े स्तर पर डिजिटलीकरण अभियान चलाया है। प्रत्येक डिजिटल प्रतिरूप के साथ चेकसम तैयार किया जाता है, जिससे अभिलेखों की प्रामाणिकता और अखंडता की पुष्टि की जा सके तथा किसी भी प्रकार के परिवर्तन या छेड़छाड़ का पता लगाया जा सके।

मूल स्रोत की प्रामाणिकता और अनुरेखण सुनिश्चित करना

ज्ञान भारतम् मिशन के अंतर्गत प्रत्येक डिजिटीकृत पांडुलिपि के साथ सुव्यवस्थित मेटाडाटा, सूचीकरण और प्रलेखन तैयार किया जाता है। इससे मूल स्रोत की प्रामाणिकता और उसकी पहचान बनाए रखने में सहायता मिलती है। इन डिजिटल प्रतियों को सुरक्षित राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी (NDR) में संरक्षित किया जाता है, जिससे शोध और अध्ययन के लिए त्वरित तथा सुविधाजनक पहुँच सुनिश्चित हो सके।

ज्ञान-सेतुः राष्ट्रीय AI नवाचार चुनौती

सम्मेलन के हिस्से के रूप में, संस्कृति मंत्रालय ने ज्ञान-सेतु नामक एक राष्ट्रीय AI नवाचार चुनौती की शुरुआत भी की, जो ज्ञान भारतम् मिशन के अंतर्गत है। यह पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस दृष्टिकोण को दर्शाती है जिसमें युवाओं और नवाचारकर्ताओं को तकनीक के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए सशक्त बनाया जाए।

10 मिलियन (एक करोड़) से अधिक पांडुलिपियों के साथ, जिनमें दर्शन, चिकित्सा, शासन और कला जैसे विषय शामिल हैं, इस चुनौती का उद्देश्य AI की मदद से इस ज्ञान-धरोहर को दुनिया के लिए अधिक सुलभ और उपयोगी बनाना है।

छात्रों, शोधकर्ताओं, संस्थानों और स्टार्ट-अप्स की भागीदारी के लिए खुला यह कार्यक्रम धरोहर संरक्षण को एक सामूहिक राष्ट्रीय प्रयास के रूप में प्रस्तुत करता है। यह पांडुलिपियों को केवल नाजुक वस्तुएँ नहीं रहने देता, बल्कि उन्हें सीखने और नवाचार के जीवित स्रोत में बदल देता है, ताकि भारत की भारतीय ज्ञान परम्परा आने वाली पीढ़ियों तक और अधिक मजबूती से पहुँच सके।

ज्ञान भारतम् मिशन के उद्देश्य

ज्ञान भारतम् मिशन को भारत की पांडुलिपि विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए एक व्यापक ढांचे के रूप में तैयार किया गया है। इसमें संरक्षण, डिजिटलीकरण, शोध और वैश्विक पहुँच–सभी शामिल हैं। इसके उद्देश्य केवल भौतिक संग्रहों की रक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पांडुलिपियों को शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक गर्व का जीवंत स्रोत बनाना भी है।

- **पहचान और दस्तावेज़ीकरण** : देशभर में पांडुलिपि संसाधन केंद्र (MRCs) स्थापित किए जाएंगे, जो विभिन्न संस्थानों और निजी संग्रहों में फैली प्राचीन पांडुलिपियों की पहचान, दस्तावेज़ीकरण और सूचीकरण करेंगे। इससे एक विश्वसनीय राष्ट्रीय रिकॉर्ड तैयार होगा।
- **संरक्षण और पुनर्स्थापन** : मजबूत पांडुलिपि संरक्षण केंद्र (MCCs) के माध्यम से पांडुलिपियों की सुरक्षा वैज्ञानिक तरीकों से की जाएगी। नाजुक और क्षतिग्रस्त ग्रंथों को बचाने के लिए निवारक और उपचारात्मक दोनों प्रकार की संरक्षण तकनीकों का उपयोग होगा, साथ ही पारम्परिक विधियों का भी सम्मान किया जाएगा।
- **डिजिटलीकरण और डिजिटल भंडार** : मिशन का लक्ष्य AI आधारित हस्तलिखित पाठ पहचान (HTR), माइक्रोफिल्मिंग और क्लाउड आधारित मेटाडेटा प्रणालियों की मदद से बड़े स्तर पर डिजिटलीकरण करना है। इससे एक राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी बनेगी, जो वैश्विक स्तर पर सुलभ होगी।
- **शोध, अनुवाद और प्रकाशन** : दुर्लभ और अप्रकाशित पांडुलिपियों का पुनरुद्धार किया जाएगा। इनके लिए आलोचनात्मक संस्करण, प्रतिकृतियाँ और अनुवाद तैयार किए जाएंगे, ताकि इन्हें विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराकर भारत की बौद्धिक विरासत को वैश्विक शोध से जोड़ा जा सके।
- **क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण** : प्रतिलिपि लेखन, पुरालेख अध्ययन, संरक्षण और पांडुलिपि अध्ययन में संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएँ आयोजित की जाएंगी। इससे विशेषज्ञों की नई पीढ़ी तैयार होगी, जो इस क्षेत्र में कार्य करेगी और संस्थागत क्षमता को मजबूत बनाएगी।
- **प्रौद्योगिकी विकास** : इस मिशन के अंतर्गत पांडुलिपियों से जुड़े डिजिटल उपकरणों (Digital Tools) के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके लिए मोबाइल ऐप्स, सुरक्षित क्लाउड स्टोरेज समाधान और इंटरनेशनल इमेज इंटरऑपरेबिलिटी फ्रेमवर्क (IIIF) आधारित प्लेटफॉर्म तैयार किए जाएंगे। इन तकनीकों की मदद से पांडुलिपियों का बेहतर संरक्षण होगा और उन्हें व्यापक स्तर पर सुलभ बनाया जा सकेगा।
- **सहभागिता और प्रोत्साहन (Engagement and Incentivisation)** : जनभागीदारी को बढ़ावा देने के लिए पांडुलिपियों के संरक्षकों और संग्रहकर्ताओं को प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे अपनी संग्रह सामग्री को प्रमाणिकता (authenticity certification) और राजस्व-साझाकरण (revenue-sharing) मॉडल के माध्यम से साझा करें। इसके साथ ही Manuscript Research Partner Programme के तहत युवा शोधकर्ताओं को जोड़ा जाएगा। उन्हें प्रदर्शनियों, डिजिटल सामग्री, संग्रहालयों और नवाचार प्रयोगशालाओं के माध्यम से सीखने और शोध के अवसर मिलेंगे।
- **वैश्विक सहयोग और शिक्षा (Global Collaboration and Education)** : इस मिशन के तहत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा, ताकि पांडुलिपियों की खोज, डिजिटलीकरण और मानकीकरण को मजबूत किया जा सके। इससे भारत वैश्विक ज्ञान आदान-प्रदान में नेतृत्व की भूमिका निभा सकेगा। पांडुलिपियों में निहित ज्ञान को पाठ्यक्रमों, उच्च शिक्षा शोध और कौशल विकास कार्यक्रमों में शामिल किया जाएगा, जिससे प्राचीन ज्ञान आधुनिक शिक्षा का हिस्सा बन सके।

आज के संदर्भ में प्रासंगिकता

ज्ञान भारतम् मिशन यह दिखाता है कि भारत किस प्रकार डिजिटल इंडिया की परिवर्तनकारी शक्ति को अपनी सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र तक विस्तारित कर रहा है।

जिस तरह UPI ने भुगतान प्रणाली को बदला और DIKSHA ने शिक्षा को डिजिटल रूप दिया, उसी तरह यह मिशन AI आधारित कैटलॉगिंग, डिजिटल रिपॉजिटरी, लिपि-विश्लेषण और बहुभाषी प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों पांडुलिपियों को संरक्षित और सुलभ बना रहा है।

यह केवल संरक्षण की पहल नहीं है, बल्कि भारत के शाश्वत ज्ञान को कक्षाओं, शोध संस्थानों और डिजिटल पुस्तकालयों तक पहुँचाने का माध्यम भी है।

ज्ञान भारतम् मिशन यह सुनिश्चित करता है कि जैसे-जैसे भारत विकास के पथ पर आगे बढ़े, वैसे-वैसे उसकी विरासत सुरक्षित रहे, युवा उससे जुड़े रहें, और उसका ज्ञान पूरे विश्व के साथ गर्व से साझा किया जाए। ❑